महाराजा छत्रसाल बुंदेला: अजेय बुंदेला साम्राज्य की प्रामाणिक गाथा

Maharaja Chhatrasal Bundela: The Unconquered Sovereign of Bundelkhand

Digital Preservation Record for Internet Archive | Document ID: IA-HIST-2026-CB52 | Author: Govind Malviya (REAL HI STORY) | Date: August 16, 2026

दस्तावेज़ का प्रकार / Document Type	ऐतिहासिक शोध एवं संग्रह (Historical Research & Archival Record)
मुख्य विषय / Primary Topic	महाराजा छत्रसाल बुंदेला, औरंगज़ेब संघर्ष (52 युद्ध), पन्ना राज्य, मस्तानी-बाजीराव प्रसंग
प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत / Primary Sources	छत्रप्रकाश (कवि लाल), मआसिर-ए-आलमगीरी (साकी मुस्तइद खान), फुतूहात-ए-आलमगीरी
संरक्षण हेतु / Archival Destination	Internet Archive (Digital Public Educational Library)

भाग १: हिन्दी विवरण (HINDI SECTION)

१. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं प्रारंभिक जीवन (1649–1667 AD)

महाराजा छत्रसाल बुंदेला का जन्म **4 मई 1649** को बुंदेलखंड के प्रतापी बुंदेला राजपूत घराने में हुआ था। उनके पिता **राजा चंपत राय बुंदेला** मुग़लिया सल्तनत के अत्याचारों और कर-नीतियों के खिलाफ अनवरत संघर्ष कर रहे थे। वर्ष 1661 में मुग़ल सेनापतियों द्वारा बिछाए गए घेरे के दौरान चंपत राय और उनकी धर्मपत्नी रानी लाल कुंवरी ने अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए वीरगति प्राप्त की।

मात्र 12 वर्ष की आयु में अनाथ हुए छत्रसाल ने अत्यंत धैर्य से काम लिया। उन्होंने और उनके बड़े भाई अंगद राय ने मिर्ज़ा राजा जयसिंह के नेतृत्व वाली मुग़ल सेना में सैनिक के रूप में कार्य करना शुरू किया। इस दौरान उन्होंने **पुरंदर के युद्ध (1665 AD)** और **देवगढ़ अभियान (1667 AD)** में अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन किया। मुग़ल सेना में रहने का सबसे बड़ा सामरिक लाभ यह रहा कि युवा छत्रसाल ने मुग़ल तोपखाने, रसद प्रबंधन, किलेबंदी और उनकी सैन्य कमज़ोरियों का गहराई से अध्ययन किया।

२. छत्रपति शिवाजी महाराज से ऐतिहासिक भेंट (1668 AD)

मुग़लों के अधीन रहकर युद्ध करना छत्रसाल की स्वाभिमानी चेतना को स्वीकार्य नहीं था। वर्ष 1668 में दक्कन अभियान के दौरान छत्रसाल गुप्त रूप से मराठा साम्राज्य के संस्थापक **छत्रपति शिवाजी महाराज** से मिले।

> **"दूसरों की चाकरी करने से बेहतर है अपनी मातृभूमि बुंदेलखंड को स्वतंत्र कराओ।"**
> — छत्रपति शिवाजी महाराज का छत्रसाल को ऐतिहासिक संदेश (1668 AD)

शिवाजी महाराज ने छत्रसाल को अपनी भवानी तलवार की प्रेरणा दी और उन्हें मुग़ल साम्राज्य के विरुद्ध **'गनिमी कावा' (छापामार युद्ध पद्धति / Guerrilla Warfare)** अपनाने की सलाह दी। इस ऐतिहासिक मुलाकात ने छत्रसाल के जीवन की दिशा बदल दी।

३. 1671 का महासंग्राम एवं 52 युद्धों की गाथा

वर्ष 1671 में मात्र 22 वर्ष की आयु में छत्रसाल बुंदेलखंड लौटे। उस समय उनके पास कोई विशाल सेना या राजकीय कोष नहीं था। कवि लालकृत 'छत्रप्रकाश' के अनुसार, उनके पास प्रारंभिक पूंजी के नाम पर केवल **5 सोने की मोहरें (सिक्के), 5 घुड़सवार और 25 पैदल सैनिक** थे।

छापामार युद्ध नीति का प्रयोग करते हुए छत्रसाल ने मुग़ल चौकियों और शाही खजानों पर अचानक हमले किए, हथियार तथा रसद सामग्री छीनी और उसी बल पर विशाल बुंदेला सेना का गठन किया। औरंगज़ेब द्वारा भेजे गए कई प्रसिद्ध मुग़ल फ़ौजदारों और सेनापतियों को उन्होंने एक-एक करके पराजित किया:

- **हाशिम ख़ान:** ग्वालियर-मालवा सीमा पर परास्त।
- **बहलोल ख़ान:** छापामार हमले में खदेड़ा गया।
- **मुनव्वर ख़ान एवं तहव्वुर ख़ान:** बुंदेलखंड के बीहड़ों में करारी शिकस्त।
- **सैयद मुज़फ़्फ़र:** रसद काटे जाने के कारण पीछे हटने पर मजबूर।

समकालीन ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार महाराजा छत्रसाल ने अपने जीवनकाल में मुग़लों और उनके सहयोगियों के विरुद्ध **52 छोटे-बड़े युद्ध** लड़े और अपने क्षेत्र की संप्रभुता को अक्षुण्ण रखा।

४. पन्ना साम्राज्य की स्थापना एवं औरंगज़ेब की संधि (1705 AD)

औरंगज़ेब अपनी मृत्यु (1707 AD) तक दक्कन और उत्तर भारत के युद्धों में उलझा रहा, परंतु वह छत्रसाल को कभी भी पराजित या बंदी नहीं बना सका। जीवन के अंतिम पड़ाव (1705 AD) में औरंगज़ेब ने छत्रसाल की वास्तविक शक्ति को स्वीकार किया। उसने छत्रसाल को दक्कन आमंत्रित कर **'राजा' की आधिकारिक उपाधि** दी, 4,000 का मनसब प्रदान किया और बुंदेलखंड पर उनके स्वतंत्र अधिकार की औपचारिक पुष्टि की।

स्वामी प्राणनाथ जी के मार्गदर्शन में महाराजा छत्रसाल ने **पन्ना** को अपनी राजधानी बनाया। इसी कालखंड में पन्ना क्षेत्र में बहुमूल्य हीरे की खदानों की खोज हुई, जिसने पन्ना साम्राज्य को अत्यधिक समृद्ध बना दिया।

५. मस्तानी एवं पेशवा बाजीराव प्रथम का प्रामाणिक प्रसंग (1728–1729 AD)

वर्ष 1728 ईस्वी में औरंगज़ेब के पूर्व मुग़ल सूबेदार **मोहम्मद ख़ान बंगश** ने विशाल सेना के साथ बुंदेलखंड पर हमला किया और 80 वर्षीय वृद्ध महाराजा छत्रसाल को जैतपुर के किले में घेर लिया।

विषम परिस्थितियों में छत्रसाल ने मराठा पेशवा **बाजीराव प्रथम** को सहायता हेतु संदेश भेजा:

> "जो गति ग्राह गजेंद्र की, सो गति भई है आज। बाजी जात बुंदेल की, राखो बाजी लाज॥"

पत्र मिलते ही पेशवा बाजीराव अपनी तीव्रगामी मराठा सेना के साथ पहुँचे और बंगश की सेना को पराजित कर छत्रसाल को मुक्त कराया। आभार स्वरूप महाराजा छत्रसाल ने बाजीराव को अपना **तीसरा पुत्र** माना, अपने राज्य का एक-तिहाई हिस्सा (झांसी, सागर, कालपी आदि) उन्हें भेंट किया, और अपनी पुत्री **मस्तानी** (उनकी फारसी पत्नी रूहानी बाई की संतान) का विवाह बाजीराव प्रथम से करवाया।

६. औरंगज़ेब के काल में भारत भर में हुए प्रमुख विद्रोह (कालानुक्रमिक तालिका)

वर्ष (AD)	विद्रोह का नाम	मुख्य क्षेत्र	प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता
1669	जाट विद्रोह	मथुरा, आगरा, भरतपुर	गोकुला जाट, राजाराम, चूड़ामन जाट
1665–1680	मराठा संघर्ष	दक्कन (महाराष्ट्र)	छत्रपति शिवाजी महाराज

वर्ष (AD)	विद्रोह का नाम	मुख्य क्षेत्र	प्रमुख नेतृत्वकर्त्ता
1671	बुंदेला विद्रोह	बुंदेलखंड	महाराजा छत्रसाल बुंदेला
1672	सतनामी विद्रोह	नारनौल (हरियाणा)	सतनामी किसान एवं साधु पंथ
1672–1675	अफ़ग़ान / आफ़रीदी विद्रोह	उत्तर-पश्चिम सीमांत	अकमल ख़ान, खुशहाल ख़ान ख़टक
1675	सिख विद्रोह	पंजाब एवं दिल्ली	गुरु तेग बहादुर जी (शहादत), गुरु गोविंद सिंह जी
1679–1707	राजपूत विद्रोह	मारवाड़ एवं मेवाड़	वीर दुर्गादास राठौड़, महाराणा राजसिंह
1681	शहज़ादा अकबर का विद्रोह	राजस्थान एवं दक्कन	शहज़ादा मोहम्मद अकबर (औरंगज़ेब का पुत्र)

PART II: ENGLISH SECTION

1. Executive Abstract & Early Life (1649–1667 AD)

Maharaja Chhatrasal Bundela (May 4, 1649 – December 14, 1731) was a distinguished Rajput monarch who successfully carved out an independent kingdom in the Bundelkhand region of Central India. His father, **Raja Champat Rai Bundela**, spent decades fighting against Mughal expansionism. In 1661, overwhelmed by Mughal forces, Champat Rai and his wife Rani Lal Kunwari embraced martyrdom, leaving the 12-year-old Chhatrasal orphaned.

Exhibiting remarkable tactical patience, Chhatrasal and his elder brother Angad Rai enlisted in the Mughal Imperial Army under Mirza Raja Jai Singh. Chhatrasal distinguished himself during the **Siege of Purandar (1665 AD)** and the **Deogarh Expedition (1667 AD)**. Serving within the ranks provided him with crucial firsthand intelligence regarding Imperial logistics, siege warfare, and tactical vulnerabilities.

2. Strategic Alliance with Chhatrapati Shivaji Maharaj (1668 AD)

Unwilling to spend his life serving the power responsible for his parents' deaths, Chhatrasal travelled to the Deccan in 1668 to meet **Chhatrapati Shivaji Maharaj**, the legendary founder of the Maratha Empire. Shivaji advised him against serving foreign rulers and encouraged him to launch an armed liberation movement in Bundelkhand using '*Ganimi Kawa*' (Guerrilla Warfare tactics).

3. The 1671 Campaign & The 52 Battles

In 1671, at age 22, Chhatrasal returned to Bundelkhand with just **5 gold coins, 5 cavalrymen, and 25 foot soldiers**. By executing swift surprise raids on Imperial outposts and capturing royal treasuries, he accumulated resources to raise a strong Bundela army.

Over the next three decades, Aurangzeb dispatched multiple high-ranking military commanders—including Hashim Khan, Bahlol Khan, Munawwar Khan, Tahawwur Khan, and Sayyid Muzaffar—all of whom suffered defeats at the hands of Chhatrasal's mobile light cavalry. Contemporary chronicles record that Chhatrasal fought **52 major and minor battles** against Imperial forces, maintaining his territory's independence throughout.

4. Treaty of 1705 & The Diamond Kingdom of Panna

By 1705 AD, bogged down in endless conflicts across India, Aurangzeb officially recognized Chhatrasal's sovereignty. The Emperor invited him to the Deccan, conferred upon him the title of **'Raja'**, granted a *Mansab* of 4,000, and ratified his territorial domain. Under the spiritual guidance of Swami Pranmath, Chhatrasal made **Panna** his capital, where the discovery of rich diamond deposits established the kingdom as a prominent economic powerhouse.

5. The Rescue of Jaitpur & The Heritage of Mastani (1728–1729 AD)

In 1728 AD, Mughal commander **Muhammad Khan Bangash** invaded Bundelkhand and besieged the 80-year-old Chhatrasal at Jaitpur Fort. Chhatrasal dispatched an urgent message to **Peshwa Bajirao I** of the Maratha Empire. Bajirao marched his cavalry to Bundelkhand, crushed Bangash's army, and lifted the siege.

In gratitude, Chhatrasal adopted Bajirao as his third son, bequeathed one-third of his kingdom (including Jhansi, Sagar, and Kalpi) to the Marathas, and gave his daughter **Mastani** in marriage to Bajirao.

📜 Legal Disclaimer, Archival Record & Fair Use Declaration

Educational & Preservation Purpose: This document is compiled, formatted, and archived specifically for public educational access, historical preservation, and digital archiving on the Internet Archive platform.

Primary Sources & Citation: Facts presented in this volume are cross-referenced with primary contemporary chronicles, including '*Chhatraprakash*' by Kavi Lal (Gorelal), '*Ma'asir-i-Alamgiri*' by Saqi Mustaid Khan, and '*Futuhat-i-Alamgiri*' by Ishwardas Nagar.

Statutory Fair Use Notice: Under Section 52 of the Indian Copyright Act, 1957, the publication and reproduction of historical research, educational commentary, and public interest documentation constitutes statutory **'Fair Use'**.

© August 16, 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY). All Rights Reserved. Catalog Ref: IA-PDF-HIST-2026-CB52.